Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2020, VOL- 8/62

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से भारत की विदेशनीति

के.बी.पाटील, Ph. D.
सहयोगी प्राध्यापक, विभागप्रमुख, संरक्षण एवं सामरिक शास्त्र विभाग,
श्रीमती एच्.आर.पटेल कला महिला महाविद्यालय, शिरपुर जि. धुळे

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन तीसरी दुनिया का सबसे सशक्त व महत्वपूर्ण आन्दोलन है । इसलिए शायद एक विदेशी अली मजरुई ने उचित हो टिप्पणी की है कि, बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में छोटे राज्यों व बड़ी शक्तियों के सम्बन्धों के बीच किसी भी विदेशनीति के सिध्दान्तों ने इतना प्रभाव नही डाला जितना कि गुटनिरपेक्षता की नीति ने । इस आन्दोलन के जन्मदाता के रुप में पंडित नेहरु तथा इसके संस्थापक के रुप में भारत को माना जाता है । जवाहरलाल नेहरु ने भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व ही अपने प्रथम रेडिओ भाषण में ७ सितम्बर १९४६ को इस भारत के लिए उपयुक्त नीति का बताया । यह घोषणा अवश्य १९४६ में हुई परन्तु भारत की आजादी के आन्दोलन के दौरान भी इसकी झलक देखी जा सकती है। तब से लेकर आज तक भारत अपने विदेशी सम्बन्धों में इस नीति का अनुसरण करता रहा है । विभिन्न प्रशासनों के परिवर्तनों के बाद भी यह नीति शाश्वत रुप से जारी है ।

भारत की विदेश नीति से एक आन्दोलन बनने की प्रक्रिया में इसे १५ वर्ष लगे, क्योंकि १९६१ में बेलग्रेड में अपने प्रथम शिखर आन्दोलन शुरु हुआ जिसका मूल उद्देश तीसरी दुनिया के देशों को सैन्य गठबंधनों में शामिल होने से बचाने के साथ-साथ स्वतन्त्र नीति अपनाने की प्रेरणा देता रहा है ।

(i) जन्मदाता के रुप में :

भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान इस नीति के जन्मदाता के रूप में है। सर्वप्रथम नेहरू ने इस नीति को भारत के लिए उपयुक्त समझा तथा फिर इसे एशिया व अफ्रीका के देशों से सम्बद्ध किया। इस दृष्टि से नेहरू ने एशिया व अफ्रीका के देशों की १९४७ व १९४९ में दिल्ली में बैठकों का आयोजन किया। इसके बाद १९५५ में बाण्डुग में इनका सम्मेलन बुलाया। १९५६ में ब्रियोनी में नासर (मिस्र) एवं टीटो (युगोस्लाविया) के साथ मिलकर इसे विश्व आन्दोलन बनाने पर सहमति कराई जिसके परिणामस्वरूप १९६१ में बेलग्रेड में प्रथम शिखर सम्मेलन हुआ। यद्यपि कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इन एशियाई देशों के इन सम्मेलनों को बेलग्रेड का पूर्वज नहीं माना जा सकता बल्कि बाण्डुग व बेलग्रेड सम्मेलन "समप्रवृत्तियों का वभिन्न मुखरित रूप है। परन्तु इस टिप्पणी के बाद भी भारत की

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भूमिका पर कोई नन्देह नहीं किया जा सकता। क्योंकि भारत इन दोनों ही गतिविधियों के उभारने हेतु मानान्तर रूप से प्रयासरत रहा है। भारत के सशक्त प्रयासों एवं नेतृत्व के कारण है न तीसरी दुनियां के देशों को एक गुट के रूप में बांधना सम्भव हुआ है। या तियुद्ध की भी इस प्रक्रिया में अप्रत्यक्ष भूमिका मानी जा सकती है। भारत की सैन् उबन्धनों से अलगाव की स्पष्ट नीति व विकासशील देशों के स्वतन्त्र दृष्टिकोण विकसित करने में पहल के परिणामस्वरूप ही यह आन्दोलन अस्तित्व में आया।

(ii) विश्व शान्ति हेतु प्रयास :

भारत द्वारा इस आन्दोलन का गठन केवल इन देशों के लिए निर्धारित सीमित उद्देश्यों (प्रभुसत्ता/स्वतन्त्रता की रक्षा) हेतु नहीं किया गया, अपितु इसके व्यापक उद्देश्यों ने विश्व शान्ति के आधारों को सुदृढ़ बनाने का कार्य किया है। गुटनिरपेक्षता के ये उद्देश्य थे- अन्तर्राष्ट्रीय वर्चस्व का विरोध; उपनिवेशवाद राष्ट्र एवं अन्य शान्ति हेतु स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का समर्थन, सुरक्षा परिषद् का प्रजातान्त्रिकरण आदि। इन व्यापक उद्देश्यों के माध्यम से गुटनिरपेक्षता आन्दोलन द्वारा न केवल तीसरी दुनिया की समस्याओं, बल्कि विश्व के सामान्य हितों से जुड़ी समस्याओं को हल करने हेतु प्रयास किए हैं। भारत ने इन उद्देश्यों को न केवल अपनी विदेश नीति यो विषय सूची का हिस्सा बनाया, अपितु गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में अपनी संक्रिय भूमिका के माध्यम से इन्हें कार्यान्वित करने का प्रयास भी किया।

(iii) नवोदित राष्ट्रों की स्वतन्त्रता एवं विकास :

भारत ने इस आन्दोलन के माध्यम से न केवल नवोदित राष्ट्रों को विश्व व्यवस्था के कारक के रूप में उभरने का अवसर प्रदान किया, बल्कि इसके सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया को समर्थन देकर शान्ति पूर्ण विश्व बनाने में सहयोग दिया। इस दृष्टि से भारत ने सबसे पहले एशिया व अफ्रीका के देशों में चल रहे स्वतन्त्रता के आन्दोलन का समर्थन किया। भारत ने हमेशा अपनी स्वतन्त्रता ही नहीं, बल्कि अन्य राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के साथ-साथ विदेश नीति के सन्दर्भ में भी भारत ने इन राष्ट्रों द्वारा स्वतन्त्र दृष्टिकोण विकसित करने पर बल दिया। अतः भारत ने इस आन्दोलन के माध्यम से 'स्वतन्त्रता क्षेत्रों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। द्वितीय, भारत ने इन देशों में हर प्रकार की उपनिवेशिक गतिविधियों को समाप्त करने हेतु प्रयास भी किए। इस आन्दोलन ने प्रत्यक्ष उपनिवेशवाद, गैर-प्रशासनिक राज्यों के दर्जा या न्यास क्षेत्रों के अन्तर्गत सभी राज्यों के लिए आत्मनिर्णय के सिद्धान्त का समर्थन किया। तृतीय, भारत ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की विषय सूची में रंगभेद को समाप्त करने की नीति को शामिल करने का समर्थन किया। महात्मा गान्धी की दक्षिण अफ्रीका में अपनी विरासत को देखते हुए भारत ने नामिबिया व दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद समाप्त करने का हमेशा समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र में इस मुद्दे पर १९४८ से लेकर दक्षिण अफ्रीका में नये प्रशासन की स्थापना तक भारत ने इस मुद पर हमाशा नेतृत्व की स्थिति अपनाई।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(iv) परमाणु शक्तियों के शोषण से बचावः

भारत ने इस आन्दोलन के माध्यम से तीसरी दुनिया या गैर -परमाणु देशों को परमाणु शक्तियों द्वारा ब्लेकमेल से बचाने का प्रयास किया। भारत पहला देश था जिसने १९५४ में सर्वप्रथम परमाणु मुक्त विश्व की बात उठाई, तथा १९६० के दशक में आंशिक परमाणु निषेध सन्धि पर हस्ताक्षर किए । इस सन्धि का लुसाका के शिखर सम्मेलन मन केवल समर्थन व्यक्त किया गया, बल्कि १९७० के दशक को 'निरस्त्रीकरण का दशक' घोषित करने की घोषणा का स्वागत भी किया ।

इस सन्दर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण एवं विवादास्पद विषय ' परमाणु अप्रसार सन्धि' (एन०पी०टी०) को लेकर उठा जिसका भारत ने हमेशा विरोध किया । जैसा पूर्व विदित है इसकी धाराओं के आधार पर परमाणु शक्तियों व गैर-परमाणु शक्तियों के मध्य एक विभेद पैदा कर दिया है। यह सन्धि परमाणु शक्तियों की पक्षधर है तथा गैर-परमाणु देशों के प्रति भेदभाव पूर्व रवैया रखती है। इसके अतिरिक्त न तो यह सन्धि व्यापक है तथा न ही निरस्त्रीकरण की दिशा में उचित कदम है। अतः भारत इसे सभी विकासशील देशों के लिए अहितकर समझता है।

यद्यपि १९९० के दशक में भारत की स्थिति में परिवर्तन नहीं आया है, परन्तु गुटनिरपेक्ष देशों का समर्थन भारत को नही प्राप्त हुआ है। क्योंकि १९९५ में 'परमाणु अप्रसार सन्धि' के असीमित समय तक लागू करने को लगभग १७८ राष्ट्रों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है जिनमें से अधिकतर इस आन्दोलन से जुड़े हुए देश हैं। इसी प्रकार, 'व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध सन्धि' (सी० टी० बी० टी०) के सन्दर्भ में भारत अलगथलग पड़ गया है। यही नहीं इसके बाद संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् के अस्थाई सदस्य के चुनाव में भी भारत को ११३ गुटनिरपेक्ष देशों में से केवल ४० देशों का समर्थन मिला। इसी परिवर्तित स्थिति को देखते हुए एम० एस० राजन ने गुटनिरपेक्ष नीति एवं गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के बीच विभेद को स्वीकार किया है। यद्यपि भारत ने अपनी निरस्त्रीकरण की भूमिका से इन देशों के विरुद्ध युद्धों को रोकने का प्रयास किया है, परन्तु इस शीतयुद्धोत्तर युग में गुटनिरपेक्ष देशों के बदले रवैये के कारण भारत की इस भूमिका पर इस आन्दोलन के माध्यम से सफलता प्राप्त करने पर प्रथम चिन्ह अवश्य लग गया है।

(v) तृतीय विश्व के देशों के लिए आदर्श प्रस्तुत :

भारत ने कई सन्दर्भो में एक 'आदर्श' या 'मॉडल भूमिका के रूप में भी इन देशों को प्रेरित किया है। भारत ने प्रारम्भिक वर्षों में गुट-निरपेक्षता के माध्यम से अपने पड़ोसियों के साथ मधुर सम्बन्ध् बनाने का प्रयास किया है तथा सभी विवादास्पद मुद्दों को बातचीत व शान्तिपूर्ण तरीकों से हल करने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त, परमाणु शक्ति का भी 'शान्तिपूर्ण उद्देश्यों हेतु परीक्षण' करने के बाद लम्बे समय तक कभी परमाणु बम बनाने हेतु प्रयोग नहीं किया। यद्यपि भारत की इस भूमिका के दोनो सकारात्मक व नकारात्मक पहलू हैं तथा इसे ज्यादा महत्व भी इसलिए नहीं दिया जा सकता

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्योकि गुटनिरपेक्ष देशों के मध्य भी इसके सन्दर्भ में विभिन्नताएँ मौजूद हैं। परन्तु इसके बावजूद भी कई छोटे 'राष्ट्र भारत की स्वतन्त्र विदेश नीति, सैन्य गुटों से अलगाव, अपनी भूमि पर सैन्य अड्डों की आज्ञा न देना, परमाणु तकनीक के प्रसार हेतु भेदभाव पूर्ण रवैये के विरुद्ध संघर्षरत रहने आदि का अनुसरण करते रहे है। इस क्षेत्र में कुछ अपवाद भी है जैसे आधार पर व्यापारिक शर्तो को न्योचित करने में लगा हुआ। द्वितीय, जी-७७ व जी-१५ के देशों में समूह के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र में तथा 'दक्षिण-दक्षिण' सहयोग को बढ़ाकर भारत इनके आर्थिक विकास हेतु सचेत है। तृतीय, बदलते हुए विश्व परिवेश १९७१ की भारत-सोवियत मैत्री, १९९० में ईराक-कुवैत युद्ध के दौरान अमेरिकी लड़ाकू विमानों को ईंधन देना, १९९१ से भारत-अमेरिका के बीच सैन्य-से-सैन्य सहयोग तथा एशिया-प्रशान्त में संयुक्त सैनिक सहयोग आदि। परन्तु यदि नई विश्व व्यवस्था में भारत छोटे राज्यों के स्वतन्त्रता, स्थिरता एवं विकास हेतु महत्वपूर्ण पहल करेगा तो कुछ गुटनिरपे देश उसका अवश्य अनुसरण करेंगे।

(vi) नई आर्थिक विश्व व्यवस्था के प्रयास :

१९७० के दशक से भारत ने 'गुटनिरपेक्षता के माध्यम से तीसरी दुनियां के आर्थिक विकास के सन्दर्भ में 'नई आर्थिक विश्व व्यवस्था की स्थापना पर बल दिया है। इसका प्रमुख कारण है कि जब तक, इन सेल में भरपः गरीबी, बेकारी तथा बीमारियाँ होगी तब तक एक स्थाई एवं समता व न्याय पर आधारित विश्व की स्थापना नहीं की जा सकती। इस दृष्टि से सर्वप्रथम भारत ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्राथमिकताओं में आर्थिक मुद्दों को न केवल सम्मिलित कराया बल्कि उनकी पैरवी भी की। यद्यपि प्रथम तीन शिखर सम्मेलनों में भी आर्थिक मुद्दे सम्मिलित थे परन्तु अल्जीयज (१९७३) के सम्मेलन में विश्व शान्ति की समस्या को आर्थिक विकास व स्वतन्त्रता से जोड़ा गया। अन्ततः इन देशों के संयुक्त प्रयासों का परिणाम ही था 'नई आर्थिक विश्व व्यवस्था' (१९७४) की घोषणा। बाद में 'नई दिल्ली घोषणा' (१९८३) में भी इस विषय पर अत्यधिक बल दिया गया।

१९९१ में शीतयुद्ध के अन्त के बाद गुट निरपेक्षता में तो शिथिलता आई है, परन्तु आर्थिक मुद्दों की बात १९९२ व १९९५ के सम्मेलनों में भी दोहराई गई। इस दौर में यद्यपि भारत भी उदारीकरण व विश्वीकरण का पक्षधर रहा है परन्तु इन देशों के हितों की रक्षा करके इस बदलाव के दौर में इन राष्ट्रों में स्थाईत्व का पक्षधर बना हुआ है। सर्वप्रथम, गैट वार्ताओं के माध्यम से विश्व व्यापार संगठन' के अन्तर्गत बहुपक्षीय में विकसित आर्थिक गुटों में बंटने के कारण (यूरोपीयन संघ, नाफता, एशियाविकासशील दोनों का) आदि भारत तीसरी दुनिया या गुटनिरपेक्ष क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों (हिन्द महासागर रिम, सापता आदि) के माध्यम से विकास करने का पक्षधर है। अतः इन प्रयासों के माध्यम तथा से भारत बदलती हुई विश्व व्यवस्था में आर्थिक लाभों को गुटनिरपेक्ष देशों तक तथा उनके समर्थन से सभी विकासशील देशों तक पहुँचा कर स्थाईत्व व शान्तिपूर्ण विकास की परिस्थिति लाना चाहता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इसके अतिरिक्त भारत इस नई स्थिति में इन देशों के विरुद्ध बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा या सामाजिक धारा के दुरुपयोग द्वारा किसी भी प्रकार के शोषण का विरोध करता है।

(vii) शीतयुद्धोत्तर युग में आन्दोलन का बचाव :

अन्ततः भारत की इस आन्दोलन को शीतयुद्ध के अन्त के बाद भी बचाये रखने की भूमिका भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शीतयुद्धोत्तर विश्व में इस शान्ति स्थापित करने वाले गुट को अर्थहीन माना जाने लगा। विकसित राष्ट्रों ने ही नहीं बल्कि स्वयं गुटनिरपेक्ष देश के नेताओं ने भी इसे निर्थक कहा या इसकी विषय सूची को अन्य संगठन से समान बताते हुए इसकी अन्य समकक्ष संगठनों में विलय की बात की। १९९१ में विदेश मन्त्रियों की बैठक में अकारा में मिश्र व युगोस्लाविया ने इसे भंग करके जी-७७ के समूह में विलय की बात की। इसी प्रकार की बात १९९२ के शिखर सम्मेलन से पहले इण्डोनेशिया के विदेश मन्त्री अली अलाताश ने कही। परन्तु भारत ने इसका सशक्त विरोध किया।

भारत का मानना था कि ऐसे संगठन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरे यद्यपि आज इसके आर्थिक मुद्दों व जी-७७ के उददेश्यों में पूर्ण समानता है, परन्तु राजनैतिक पक्ष आर्थिक मुद्दों के बारे में संघर्ष को और सशक्त बनाता है। इस प्रकार भारत ने शीतयुद्धोत्तर युग में भी बदलते हुए परिवेश में इस संगठन अधिक सार्थक का महत्व भी बना रहेगा।

निष्कर्ष -

अतः निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के माध्यम से भारत ने न केवल अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान को बनाए रखा, अपितु तीसरी दुनिया के देशों को शीत युद्ध की चपेट से भी बचाए रखा। इस व्यवस्था से सीधे महाशक्तियों का टकराव ती उलाही साथ ही इससे विकासशील राष्ट्रों के संघर्षों में भी कमी आई है। भिप्रारम्भिक दो दिशान में इस आन्दोलन में माध्यम से उपनिवेशवाद, रंगभेद, शोषण आदि कर समाप्त करके विकासशील देशों में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता अभियान की तीव्रता प्रदान करके विश्व में स्थाईत्व लाने का कार्य किया। इसके साथ-साथ ही गैर प्रशासनिक एवं न्यास क्षेत्र को समानता का दर्जा दिलाया। बाद के दो दशकों में इस आन्दोलन का रुख आर्थिक मुद्दों की ओर अधिक आकृष्ट हुआ। क्योंकि नवोदित राज्यों में स्वतन्त्रता के बाद विकास का मुद्दा सबसे अहम था। इस हेतु भारत ने अन्य राष्ट्रों के साथ मिलकर नई आर्थिक विश्व व्यवस्था की स्थापना के प्रयास से एक ओर विकसित राष्ट्रों से सौदेबाजी की तो दूसरी ओर विकासशील राष्ट्रों के मध्य सहयोग को बढ़ाने पर बल दिया। इन गतिविधियों के साथ-साथ निरस्त्रीकरण, विशेषकर परमाणु निरस्त्रीकरण की समस्या पर भी भारत ने विशेष महत्त्व देते हुए भरसक प्रयास किए। इन सब गतिविधियों में भारत की भूमिका बहुत सशक्त रही। भारत के नेताओं ने विभिन्न शिखर सम्मेलनों में बढ़चढ़ कर भागीदारी द्वारा, संयुक्त राष्ट्र में भागीदारी, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के कार्यक्रमों एवं नीतियों

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को कार्यान्वित करने आदि सन्दर्भो में कार्य करके इस आन्दोलन के प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इन सब बातों के अतिरिक्त इस आन्दोलन के जन्म तथा शीतयुद्धोत्तर युग में इसकी सार्थकता की चुनौतियों के मध्य इसको बनाये रखने की भूमिका में योगदान से भारत ने इस तीसरी दुनिया महत्त्वपूर्ण आन्दोलन की जिन्दा रखा है। यद्यपि आज भारत की इस आन्दोलन निबद्धता तथा अन्य राष्ट्रों के मध्य उत्पन्न शंकाओं एवं नई मजबूरियों के अन्तर्गत अध, शायद उतना सशक्त नहीं रहा है। फिर भी तीसरी दुनिया में शान्ति स्थापना का एक मात्र आन्दोलन अवश्य है जिसके मूल्यों के महत्व को आसानी से नकारा नहीं जा सकता। अतः इन विकासशील देशों की समस्याओं पर चर्चा करने वाले एक मंच के रूप में इसका प्रयोग भारत ने तीन प्रकार से- जन्म, सक्रिय संचालन तथा विघटन से बचाने वाली भूमिकाओं के रूप में किया है। इस आन्दोलन की सेवा कर के मध्य वार्ताकार की कड़ी के रूप में भी भारत ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

सन्दर्भ-

अली मजरूई. फारवर्ड, पीटर विलेट्स, दॉ नॉन अलाईड मूवमैण्ट, लन्दन, १९७८. पृ० xiii.
रमेश ठाकुर, दो पालिटिक्स एण्ड इकोनोमिक्स ऑव इण्डियाज फॉरेन पालिसी, नई मुभिस्पेक्षा आन्दोलन सन्दर्भ दिल्ली, १९९४, पृ० १५.
एम० एस० राजन इण्डिया एण्ड दो नाम', वर्ल्ड फोक्स, वाल्यूम १७, अंक १०-११-१२. अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर १९९६, पृ० ५७.
ठाकुर, पाद टिप्पणी संख्या २, पृ० १७.
देखिए. नेहरू स्टैंड स्टील एग्रीमैण्ट', भारत सरकार, डिसआर्मामैण्ट : इण्डियाज इनीसियेटिवज, नई दिल्ली, १९८८, पृ० ५-६.
विस्तृत वर्णन हेतु अध्याय-२१ देखिए।
राजन् पाद टिप्पणी संख्या ३.
संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज, ए/९५५९, छटा विशेष सत्र, १९७४, महासभा रेजोलुशन ३२०२, पूरक १
विस्तृत वर्णन हेतु दखिए. आर० एस० यादव, 'नाम इन दो न्यू वर्ल्ड आर्डर', इण्डिया क्वार्टरली, वाल्यूम ४९, अंक ३. जुलाई-सितम्बर १९९३. पृ० ४७-६८.
मोहम्मद बिन छम्बास, दो नान एलाईण्ड मूवमैण्ट इन दॉ पोस्ट कोल्ड वार ईरा, रिव्यू ऑद इण्टरनेशनल अफेयर्ज, वाल्यूम ४२. अंक ९८४, ५ अप्रैल १९९१, पृ० ६. सतीश कुमार, 'नाम मस्ट सेट ईटस हाऊस इन आर्डर', टाइम्स ऑव इण्डिया. ७ अक्टूबर १९९१; अनिल राजिमवाले. 'ड्राप नाम, अलाईन विद न्यू वर्ल्ड'. दों पैट्रिआट २५ सितम्बर १९९१, जगत मेहता, 'नॉन अलाईनमैण्ट : दॉ एण्डरलाईंग रेशनेल'. तथा नान अलाईनमैण्ट मिशन अकम्पलिस्ट' इण्डियन एक्सप्रेस (नई दिल्ली) २ व ३ सितम्बर १९९१
राजन, पाद टिप्पणी संख्या ३ से उद्धृत, पृ० ६०.
विस्तृत वर्णन हेतु दखिए, 'नान अलाईण्ड मूवमैण्ट : रिट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रोस्पैक्ट' (लेख श्रृंखला), वर्ल्ड फोक्स, वाल्यूम १८, अंक ७, जुलाई १९९७.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies